शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –32 -34

पुस्तक समीक्षा : ज़िंदगी के रंग

डॉ. रेणु सिन्हा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, निर्मला कॉलेज, राँची
मो- 9430763472 .

Received– 28 may - 2026
Accepted-30 May - 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
डॉ. रेणु सिन्हा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, निर्मला कॉलेज, राँची
मो- 9430763472 .
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041408
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

डॉ. किरण कुमारी ने अपने गज़ल संग्रह "ज़िंदगी के रंग" द्वारा हिंदी गज़ल लेखन की दुनिया में इंद्रधनुषी रंग के साथ जीवन के विविध आयामों को उकेर कर समाज की समकालीन चेतना को बड़ी बारीकी के साथ शब्दों में पिरोया है । डॉ. किरण कुमारी का यह गज़ल संग्रह "जिंदगी के रंग" (दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2020) समकालीन हिंदी गज़ल साहित्य के भंडार में एक ऐसे दीप्त रत्न के रूप में सुशोभित हो रहा है , जो मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक चेतना के विविध पहलुओं को अनेक रंगों में भर कर एक भाव संसार तैयार करता है।

यह संग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक विसंगतियों और आत्म-साक्षात्कार का एक जीवंत कोलाज है।इसमें प्रेम का माधुर्य भी है और विरह की टीस भी । समाज की विसंगतियों पर कटाक्ष है और बदलती दुनिया के प्रति गहरी चिंता भी। इन्होंने अपनी कलम से किसी काल्पनिक लोक की रचना नहीं की, बल्कि हमारे आसपास की धड़कती सच्चाई को स्वर दिया है। एक लेखिका के तौर पर डॉ. किरण कुमारी ने स्त्री जीवन के उन अनछुए पहलुओं को बहुत बारीकी से छुआ है, जो अक्सर पारंपरिक विमर्श में छूट जाते हैं। उनकी गज़लें स्त्री के अस्तित्व, उसके अधिकारों और उसकी अदम्य इच्छा शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कवयित्री डॉ.किरण कुमारी ने जीवन के इंद्रधनुषी रंगों— प्रेम, समर्पण, न्याय, प्रकृति और आध्यात्म , जीवन दर्शन, राष्ट्रप्रेम, मानवतावाद, माँ का संतान के प्रति आशीष और वात्सल्य, संतान का माता-पिता के प्रति आधुनिक प्रभाव युक्त उपेक्षात्मक रवैया आदि को भावनाओं के कैनवास पर बड़े ही खूबसूरती के साथ कूची थमाया है

किसी भी श्रेष्ठ साहित्य का प्रथम उद्देश्य मनुष्य के भीतर की कलुषित भावनाओं का परिष्कार करना होता है। डॉ. किरण कुमारी इस तथ्य से भली-भांति परिचित हैं। उनकी पंक्तियाँ --

"ये गर्दे गुबार दिलों के हटाने ही होंगे।
अलहदा कुछ तरीके आजमाने ही होंगे ।"

यह केवल एक मिसरा नहीं, बल्कि एक युगबोध है। लेखिका मानती हैं कि जब तक हम अपने भीतर व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष और संकीर्णता की धूल (गर्दे गुबार) को साफ नहीं करेंगे, तब तक एक सुंदर समाज की कल्पना अधूरी है। यह काव्य-दृष्टि उन्हें एक समाज अन्वेषी और सुधारक के रूप में स्थापित करती है। इनके शेरों में प्रकृति और मानवीय उल्लास का तादात्म्य है । कवयित्री की दृष्टि प्रकृति के सूक्ष्म परिवर्तनों को पकड़ने में सिद्धहस्त है। ऋतुराज बसंत का आगमन उनके यहाँ केवल एक मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि जीवन में नवीनता और ऊर्जा का संचार है --

"ऋतु बसंत की धरा पर आ गई ।
फूल सरसों खिलखिलाते ही रहे ।"

××××××××××××××××××××

"झोंकों में झूम रही मंजरियाँ ।
कू कू गाती कोयल काली है।"

इसमें कवयित्री कितने सुंदर शब्द विन्यास के साथ प्रकृति प्रेम और दार्शनिक चेतना को एक साथ पिरो कर इसके माध्यम से पाठकों को जड़ता छोड़ चेतनता की ओर बढ़ने का संदेश देती हैं। उनकी भाषा में वह प्रवाह है जो पाठक को उस 'बासंती' उल्लास से

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –32 -34

दसराबोर कर देता है। प्रकृति-पर्यावरण के प्रति लेखिका का प्रेम और सहज बोध वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत कुछ कह जाता है – ”सूर्यसुता बहती रहे/मेरी यही उतराई है।“ एक साथ त्रेता - द्वापर से आज के भौतिक, यांत्रिक, पूँजीवादी कलियुग को जोड़ते हुए बहुत कुछ कह जाती है।लेखिका आज रसायनिक झाग ,प्लास्टिक और गंदगी से भरी यमुना (भारत के सभी पवित्र नदी-सरोवर ,जिससे हमारी संस्कृति सभ्यता जुड़ी हुई है) के प्रति कहीं न कहीं बहुत अधिक चिंतित हैं।

डॉ.किरण कुमारी जी समतामूलक और न्यायवाद की मुखापेक्षी होते हुए समाज में व्याप्त असमानता के विरुद्ध समतामूलक, समावेशी अत्यंत मुखर और गाँधीवाद से प्रभावित दिखाई देती हैं। उनका जीवन दर्शन सह-अस्तित्व की भावना पर टिका है --

“खुद भी जियें, जीने भी दें
धरती सब का नसीब है।”

यह पंक्ति उनके वैश्विक भाईचारे और न्यायप्रियता को दर्शाती है। वे एक ऐसे समाज की पक्षधर हैं जहाँ हर व्यक्ति को गरिमा के साथ जीने का अधिकार हो, और कोई किसी के मार्ग का रोड़ा न बने।

डॉ. किरण कुमारी के काव्य में जीवन की सार्थकता ‘स्व’ से निकलकर ‘सह’ में समाहित होने में है --

“न्याय पूर्वक अन्य जीव भी जी सकें
माँ इला का यही आज इंसाफ है।”

यह उद्धरण भारतीय मनीषा के ‘परोपकाराय सतां विभूतयः’ के दर्शन को आधुनिक संदर्भों में परिभाषित करता है। उनके लिए जीवन केवल उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है, जिसे दूसरों की सेवा और प्रेम में समर्पित कर देना ही इसकी नियति है।

इस संग्रह में प्रेम, समर्पण और आध्यात्मिक ऊँचाई पुस्तक का एक महत्तवपूर्ण सोपान है जहाँ लेखिका का प्रेम अलौकिकता की ओर मुड़ जाता है। चाहे वह सखा रूप में ईश्वर हो या दांपत्य जीवन का अटूट विश्वास, उनके यहाँ समर्पण की पराकाष्ठा है-उन्होंने अपनी कलम से किसी काल्पनिक लोक की रचना नहीं की, बल्कि हमारे आसपास की धड़कती सच्चाई को स्वर दिया है।

“सखा मनोहर न हो निकटगर सदा जगत् बेदिल लगता है।”

प्रेम की यह व्याकुलता आध्यात्मिक धरातल पर पहुँचकर एक दिव्य नृत्य बन जाती है--

“नाच मन मयूर उठे, आहट हरि आवन की”

यहाँ ‘हरि’ की आहट मात्र से मन का मयूर नृत्य करने लगता है। यह मीरा की भक्ति और सूफी संतों की तन्मयता का स्मरण कराता है, जहाँ आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी मिट जाती है।

इस जीवन के न जाने कितने फ़साने हैं ? यही तो जीवन का रहस्य है ,इस गज़ल संग्रह में कितने सुंदर रंगों को कूची उकेरता है देखिए-

“दिख रहा जो शांत गलियारा अभी
अनगिनत बिखरे फ़साने यहाँ।”

कवयित्री जीवन के किसी रंग से बेरंग होना नहीं चाहती ,तब फिर माता-पिता जो जीवन के आधार हैं ,इनसे “जिंदगी के रंग” को बेरंग कैसे छोड़ती ? आज की युवा पीढ़ी कैसे आधुनिकता के व्यामोह में माता-पिता को किनारा कर रहे हैं इसका बड़ा ही सटीक चित्रण इस शेर से समझिए-

“माँ-बाप फालतू सी चीज़ हो गये।
पिज्जा बर्गर जब लजीज़ हो गये।‘
जबतक न हो विवाह, था लगाव सा
ससुराल के रिश्ते अज़ीज़ हो गये।“

आज के समाज का यथार्थ निरूपण कवयित्री करती हैं। मानवतावाद और राष्ट्र वाद पर डॉ.किरण कुमारी की तूलिका रंग भरते हुए कहती है –

दया,स्नेह ,करुणा सब आपके ही लिए
मनुजता से पहचान आपकी खातिर।
मिटाना चाहे इसे दुश्मन जितना भी
अडिग दृढ़ हिंदुस्तान आपकी खातिर।
देख भारत का सब्र, आज दुनिया दंग है।

कवयित्री की दृष्टि समय के चक्र को बहुत बारीकी से देखती है। वे मानती हैं कि समय ही मनुष्य को घाव देता है और समय ही परम औषधि भी है। उनकी दार्शनिकता इन पंक्तियों में मुखर होती है:

“वक्त ही जख़्म दे रहा है, वक्त से बड़ा न मरहम है।”

यह विचार द्वंद्वात्मक है, जो पाठक को जीवन के उतार-चढ़ाव में धैर्य रखने की प्रेरणा देता है। वे समय के संकट को पहचानती हैं और मनुष्य की सुरक्षा के प्रति चिंतित होकर कहती हैं:

“कैसा गज़ब ये समय है,
देखो मनुज न अभय है।”

इस 21वीं सदी में समाज विद्रूपताओं और अवरोधों से भरा पड़ा है। जहाँ कहीं भी कदम बढ़े एक पर एक समाज में व्याप्त नकारात्मक शक्तियों, स्वार्थ और षड्यंत्रों से जूझना ही नियति बन गई है लेखिका ने रूपकों के माध्यम से बड़ी निर्भीकता से इस रंग को ढाला है। जब वो कहती हैं --

“झंडे ले निकले बबूल, कंटक, कुश।
रास्ता निकालें कैसे सब हैरान हैं।”

यहाँ ‘बबूल’ और ‘कंटक’ उन बाधाओं और नकारात्मक तत्त्वों के प्रतीक हैं जो विकास के मार्ग को अवरुद्ध करते हैं। यह वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिवेश पर एक गंभीर कटाक्ष है, जहाँ सुगम मार्ग खोजना कठिन हो गया है। वैश्विक त्रासदी और भारतीय जिजीविषा (कोरोना काल का संदर्भ)उल्लेख कर उस स्याह रंग को मिसरों के लाक्षणिक रंग में भरा गया है।संकट के समय में साहित्य समाज का संबल बनता है। डॉ. किरण ने महामारी के उस भयावह दौर को अपनी गजलों में दर्ज किया है, जहाँ एक ओर भय था तो दूसरी ओर भारत का अदम्य साहस वैश्विक जगत को आश्चर्यचकित कर रहा था। भारत की इस भयावह चक्र को बेधने में अपने समृद्ध विज्ञान और मज़बूत दृढ़संकल्प शक्ति से विजय तो मिली ही ,संकट के दौर से दूसरे राष्ट्रों को भी रक्षित करने में सफलता मिली ; यह मिसरा देखने लायक है --

“तंग है जी तंग है, वायरस से जंग है।
“देख भारत का सब्र, आज दुनिया दंग है।”

ये पंक्तियाँ न केवल इतिहास को (कोरोना काल के संकट को)दर्ज करती हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति के ‘धैर्य’ और ‘अनुशासन’ को वैश्विक स्तर पर गौरवान्वित भी करती हैं। कवयित्री का हृदय समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की पीड़ा से द्रवित होता है। मजदूरों और शोषितों की व्यथा को उन्होंने अत्यंत मार्मिक शब्दों में पिरोया है।शोषण, बेबसी और मूक वेदना को अभिव्यक्ति दी है ---

“पाँव में छाले हैं, होठ पे ताले हैं।”

शोषण के इस चक्र को बड़ी गहराई से वे महसूस करती हैं जहाँ व्यवस्था के ‘पाट’ इतने भारी हैं कि व्यक्ति की आवाज़ दबकर रह गई है--

“शोषण चक्र चलते, पाट न दीखते।
बेबस निगाह में अनकही बात है।”

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page –32 -34

आधुनिक युग में रिश्तों के बीच बढ़ती दूरी और कृत्रिमता कवयित्री चिंता का मुख्य विषय है। रिश्तों का क्षरण और मुखौटों की संस्कृति हमारे संस्कारों को छिन्न-भिन्न कर रही है। वे संबंधों में व्याप्त अविश्वास और घात-प्रतिघात पर तीखा प्रहार करती हैं ---

"चेहरे पर मुखौटे, रिश्ते खोटे हैं।
संबंधों में अविश्वास है, घात है।"

यह शेर आज के भौतिकवादी युग में खोती हुई संवेदनाओं और रिश्तों की खोखली होती बुनियाद का दर्पण है। किसी रचनाकार का दायित्व और सकारात्मक ऊर्जा पर रंग छिड़कती, शब्दों का जाल बुनती तमाम दुख और विसंगतियों के बावजूद डॉ. किरण कुमारी की लेखनी सकारात्मकता का दामन नहीं छोड़ती। वे स्वयं को एक ऐसी साधिका के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो नित्य नवीन सृजन में तल्लीन है---

"गुनगुनाती तल्लीन गाती हूँ, नित नई गज़लें सुनाती हूँ।"

उनकी कलम के लिए शब्द केवल वर्ण नहीं, बल्कि अनमोल मोती है ,साथ ही यह भी दिखाने का प्रयास है कि "जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि" देखिए इस कृची के सौंदर्य को ----

"नित्य मोतियों को सजाती, अनमोल सदा कवि कलम है।"

सबसे महत्त्वपूर्ण "मानवता की विजय का शंखनाद संग्रह का सबसे ऊर्जावान पक्ष वह है जहाँ लेखिका मनुष्य के साहस की वंदना करती हैं। आपका विश्वास है कि मानवीय इच्छाशक्ति के सामने बड़ी से बड़ी चुनौतियाँ घुटने टेक देती हैं यहाँ किरण की कूची का रंग कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुनके सामने श्रीकृष्ण के 'गीता का संदेश' को उभारती दिखाई देती-----

"मनुष्य बहुत ही साहसी, खींच कर लाता विजय है।"

यह उद्घोष पाठकों में आत्मविश्वास भरता है और उन्हें कर्मपथ पर अडिग रहने का संदेश देता है।

समग्रता में कहा जाए तो , डॉ. किरण कुमारी की कृति "जिंदगी के रंग" शब्द और अर्थ का एक ऐसा संगम है जहाँ पाठक को न केवल अपनी व्यथा का स्वर मिलता है, बल्कि उससे उबरने का मार्ग भी दिखाई देता है। यह संग्रह अपनी वैचारिक प्रखरता, शिल्प की सादगी और भावों की तरलता के कारण दीर्घकाल तक पाठकों के हृदय में सुरक्षित रहेगा। यह कृति सिद्ध करती है कि साहित्य जब जीवन के वास्तविक रंगों से सराबोर होता है, तभी वह कालजयी बनता है।यह गज़ल संग्रह निश्चित कालजयिता को प्राप्त करेगा। 'जिंदगी के रंग' पाठकों को आज के दौर में भी जब लोग साहित्य से दूर भाग रहे हैं ; एक पठनीय रचना है जो आरंभ से अंत तक पाठक को विविध रंगों में डुबोये रखने में सक्षम है।साथ ही हिंदी गज़ल संसार के पुरोधा 'दुष्यंत कुमार' के गज़लों को समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता के साथ आगे बढ़ाते हुए गागर में सागर भरने का दम रखती है। पुस्तक का मुखपृष्ठ भी बेहद ही खूबसूरती के साथ शीर्षक की सार्थकता एवं संगृहीत शेरों को अभिव्यक्त कर रहा है।

जिंदगी के रंग" की भाषा सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण है। डॉ. किरण कुमारी ने क्लिष्ट लच्छेदार शब्दों के बजाय जनमानस की भाषा को प्राथमिकता दी है।इसके सभी शेर सीधे भावना पर असर करती है। भाषा उर्दू सापेक्ष न होकर हिंदवी-हिंदुस्तानी है ,जो कृति को भारतीय समाज के लिए पठनीय तथा समझ के दायरे में रखती है। गज़लों में लोक-प्रचलित मुहावरों का सटीक प्रयोग उन्हें और अधिक प्रभावी बनाता है ,एक सुंदर शेर देखिए— बढ़कर एक से इक्कीस होती गई नित्य सबके लिए असीस बोती गई। "इसमें मुहावरेदार भाषा में "एक से इक्कीस होना" कहा गया है। प्रसंगानुसार माँ भले ही किसी हालात में रहे ,अपने संतान को सदा यही इक्कीस होने की -फलने-फूलने का आशीष अंतिम सांस तक देती परमात्मा के शरण में चली जाती है। यह शेर माँ के अनूठे ईश्वरीय वात्सल्य को रेखांकित करता है। कहा जाए तो

प्रत्येक शेर अपने आप में एक मुकम्मल कहानी कहता है। भावों का उतार-चढ़ाव पाठक को अंत तक बांधे रखता है। गज़लों की भाषा-शैली गत विशेषता "वह्र, रदीफ़, और काफ़िया" का बड़ा ही अनुशासनात्मक प्रयोग किया गया है जो काबिलेगौर है --- 'बह्र' गज़ल का वह छंद या पैमाना है,जो उसकी लय निर्धारित करता है ।बह्र का सुंदर प्रयोग संग्रह की गज़लों में एक स्वाभाविक प्रवाह ले आया है। कवयित्री ने अपनी गजलों के लिए ऐसे बह्रों का चुनाव किया है जो न केवल सुनने में मधुर हैं, बल्कि जिनमें गंभीर दार्शनिक बातों को भी सरलता से पिरोया गया है। यथा -

"वक्त ही जख्म दे रहा है, वक्त से बड़ा न मरहम है" —यहाँ शब्दों का उतार-चढ़ाव एक निश्चित मात्रात्मक अनुशासन में है, जो पाठक को एक विशेष लय का अनुभव कराता है।

'रदीफ़' निरंतरता का सौंदर्य है, रदीफ़ वह शब्द या शब्दों का समूह है जो हर शेर के अंत में ज्यों का त्यों दोहराया जाता है। यह गज़ल को एक सूत्र में बांधने का काम करता है। लेखिका ने इस संग्रह में बहुत ही प्रभावी रदीफ़ों का प्रयोग किया है। जैसे -

"तंग है जी तंग है / वायरस से जंग है" — यहाँ 'है' रदीफ़ के रूप में निरंतरता प्रदान कर रहा है।

"नित्य नई गज़लें सुनाती हूँ" — यहाँ 'हूँ' रदीफ़ के रूप में लेखिका की उपस्थिति और समर्पण को दर्शाता है।

उनकी रदीफ़ें कभी भी थोपी हुई नहीं लगती, बल्कि भाव के साथ बहती हुई महसूस होती हैं।

क़ाफिया गज़ल की अनुगूँज है । क़ाफिया उन तुकांत शब्दों को कहते हैं जो रदीफ़ से ठीक पहले आते हैं। गज़ल का सारा चमत्कार और ध्वनि-सौंदर्य इन्हीं क़ाफ़ियों पर टिका होता है।

डॉ. किरण कुमारी के संग्रह में क़ाफ़ियों का चयन बहुत विविधतापूर्ण है। उदाहरण के तौर पर

"तंग / जंग / दंग"
"कलम / मरहम / कम"

ये तुकबंदियाँ केवल ध्वनि के लिए नहीं हैं, बल्कि ये प्रसंग को गहराई प्रदान करती हैं। जब वे 'कलम' के साथ 'मरहम' का क़ाफिया मिलाती हैं, तो यह सीधे तौर पर साहित्य की उपचारात्मक शक्ति को रेखांकित करता है।

गज़ल की बेशुमार प्रेमी कवयित्री ने जहाँ बह्र रदीफ़ और काफिया के अनुशासन को बड़े ही सलीके से जिंदगी के रंग" में संजो कर आला दर्जे का संग्रह गज़लप्रेमियों को दिया है साहित्य संसार के लिए किसी चमकते मोतियों की माला से कम नहीं । कहा जा सकता है कि कालचक्र का सत्य जिससे हर मनुष्य इस बहुरंगी दुनिया में जूझता ,रुकता -दौड़ता हांफता चला आ रहा है , बहुत ही संजीदगी के साथ "ज़िंदगी के रंग" में सजाया है डॉ.किरण कुमारी जी ने इस सुंदर पैगाम के संग –

"ज़िंदगी इक पैगाम है
सबकुछ दूजे के नाम है।"